International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता: शिक्षक–छात्र संबंधों का अध्ययन"

नीलम बेंदा

शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग

टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर, राजस्थान

शोध पर्यवेक्षक

प्रोफेसर (डॉ.) यशोदा चौहान

शिक्षा विभाग

टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर, राजस्थान

सार

इस शैक्षिक प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। विद्यार्थियों की विषय के अतिरिक्त जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आवश्यक ज्ञान को प्राप्त करने की स्वाभाविक प्रबल इच्छा होती है। अध्यापक पर विद्यार्थियों के इस अधिकार को सजीव करने का पूर्ण दायित्व है। प्राचीन काल में गुरु दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व था। आधुनिक काल में विभिन्न शैक्षिक नवाचारों एवं शिक्षण तकनीकी के विकास के परिणामस्वरूप अध्यापक की भूमिका में परिवर्तन हुआ है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध–प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन द्वारा अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।

प्रस्तावना

मानवीय जीवन के उन्नत क्रम के विकास के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शिक्षा मानव जीवन की आधारभूत प्रक्रिया है जिससे मानव मन उन्नत होता है और जीवन श्रेष्ठता की सम्प्राप्ति करता है। चित्त उद्दात बनता है जिसके कारण स्वयं का तथा समष्टि का बहुपक्षीय कल्याण सम्भव हो पाता है। शिक्षा मूलभूत रूप से अध्यापक एवं अध्येता के बीच सूक्ष्म शैक्षिक प्रक्रिया है। इस शैक्षिक प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। विद्यार्थियों की विषय के अतिरिक्त जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आवश्यक ज्ञान को प्राप्त करने की स्वाभाविक प्रबल इच्छा होती है। अध्यापक पर विद्यार्थियों के इस अधिकार को सजीव करने का पूर्ण दायित्व है। प्राचीन काल में गुरु दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व था। आधुनिक काल में विभिन्न शैक्षिक नवाचारों एवं शिक्षण तकनीकी के विकास के परिणामस्वरूप अध्यापक की भूमिका में

परिवर्तन हुआ है। कोठारी आयोग ने कहा है कि हम चाहे कितनी भी अच्छी योजनाओं एवं नीतियां क्यों न बना लें उनकी सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्यापक कितने उत्साह से उन्हें कक्षा में क्रियान्वित करते हैं। अतएवं यह कह सकते हैं कि अध्यापक समस्त विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र बिंदु हैं। तथा समस्त शैक्षिक प्रक्रिया उसके इर्दगिर्द घूमती है। शिक्षा प्रक्रिया में अध्यापक एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है। वस्तुतः वही हमारी संतति के भविष्य का संरक्षक होता है।

सामान्यतः ऐसा समझ लिया जाता है कि अध्यापक का मुख्य कार्य विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना है। परन्तु वास्तव में केवल ज्ञान प्राप्त करने से ही उसके कर्तव्य की इतिश्री नहीं होती वरन् उसे पूर्ण मानव बनाने एवं जीवन जीने की कला सिखाने के लिए उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना अध्यापक का परम कर्तव्य है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व के अन्तर्गत बालक के सभी सद्गुण समावेशित हैं यथा उसमें मूल्यों का विकास करना, सकारात्मक सोच विकसित करना, सहयोग की भावना, नैतिकता का विकास, धैर्यशील बनने की क्षमता का विकास करना तथा उसका चरित्र निर्माण करना इत्यादि महत्त्वपूर्ण कर्तव्य हैं। मनुष्य के चरित्र का महत्त्व सर्वाधिक है। अंग्रेजी में एक कहावत है–

यदि धन चला गया तो कुछ भी नहीं गया, यदि स्वास्थ्य चला गया तो कुछ शारीरिक हानि अवश्य हुई परन्तु यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ नष्ट हो गया। धन तो पुनः कमाया जा सकता है, स्वास्थ्य भी प्रयास करने पर कुछ हद तक सुधारा जा सकता है, परन्तु भ्रष्ट हो जाने पर मनुष्य की मनुष्यता ही चली जाती है। फिर तो वह मानव न होकर पशु की श्रेणी में चला जाता है। अतएवं छात्रों में चरित्र निर्माण करना और उसकी रक्षा करना अध्यापक का मुख्य कर्तव्य है।

शिक्षक की भूमिका इतनी ही नहीं है कि मात्र विषय की जानकारी दे, वरन् उनका दायित्व यह भी बनता है कि वह विषय को भली प्रकार हृदयंगम भी करवा दें। उनके दायित्व में अभिभावक का दायित्व भी सम्मिलित है। यद्यपि अब आवासीय विद्यालय कम हैं, जबकि पहले इस स्तर के विद्यालय होते थे। वाल्मीकि रामायण में एक प्रसंग आता है, जब महर्षि विश्वामित्र अपनी शिक्षण–प्रक्रिया के समय राम और लक्ष्मण को प्रोत्साहन देते हुए प्रातःकाल जगाते हुए कहते थे,

"उत्तिष्ठ नरशार्दूल पूर्वा संध्या प्रवर्तते।"

अर्थात हे पुरुषों में श्रेष्ठ उठो ! पहली संध्या का समय हुआ है। विश्वमित्र जैसे आचारवान और तपस्वी गुरु और राम–लक्ष्मण जैसे विनयी अध्यवसाय सम्पन्न सुपात्रों को पाकर ही बला और अतिबला विद्याएं सार्थक हुई। गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर के शब्दों में "हमारे शिक्षक जब यह समझने लगेंगे कि हम गुरु के आसन पर बैठे हैं और हमें अपने जीवन द्वारा अपने छात्रों में प्राण फूंकने हैं, अपने ज्ञान द्वारा बालकों का उद्धार करना है, उस समय वे सत्य रूप में स्वाभिमान के अधिकारी बन सकेंगे। तब वे ऐसा प्रदान करने के लिए तत्पर हो सकेंगे जो मूल्य देकर प्राप्त नहीं हो सकता। उस समय वे छात्रों के समक्ष प्राकृतिक नियम के अनुसार सम्मानित एवं पूज्य बन सकेंगे। शिक्षक का पावन कर्तव्य है कि माता–पिता ने जिन बच्चों को उसे सौंपा है उन्हें उचित शिक्षा देकर चरित्रवान बनाएं। महापुरूषों का जीवन–चरित्र पढ़ने से पता चलता है कि उनमें से कुछ अपनी माता या पिता से प्रभावित हुए थे परन्तु अधिकांश के निर्माण में उसके शिक्षकों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। ऐसे अनेक उदाहरण पाए गए हैं जहाँ छात्र अपने शिक्षक का आजीवन ऋणी रहा है और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अपने चरित्र–निर्माण में शिक्षक का प्रमुख योगदान मानकर उसकी पूजा करता रहा है। यदि शिक्षक योग्य है अपने कर्त्तव्यानुसार छात्र को पुत्रवत मानकर उसे सुयोग्य मानव तथा प्रबुद्ध नागरिक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तो निश्चित ही उसका छात्र उसे ईश्वरतुल्य मानेगा उसके उपदेश और आदेश को ब्रह्मवाक्य समझेगा तथा निम्नलिखित सूक्ति को चरितार्थ करेगा–

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मैः श्री गुरुवै नमः।।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के अनुसार– "वास्तव में शिक्षक हमारे भाग्य निर्माता हैं समाज अपने ही विनाश पर उसकी उपेक्षा कर सकता है" अर्थात् शिक्षक समाज की धुरी होता है, जिसके परितः सर्वत्र संस्कार करने की आवश्यकता होती है। साथ ही शिक्षक को एक आदर्श तथा प्रतिदर्श माना जाता है। शिक्षक अपने ज्ञान एवं अनुभव से छात्रों में मूल्य संस्कारित कर सकते हैं तथा छात्रों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। एक अच्छे शिक्षक का सर्वोत्तम गुण यह है कि उसे विषय–वस्तु या उस क्षेत्र में उसके पास वरेण्य गुण विद्यमान हों। एक अध्यापक को प्रभावशाली अध्यापक कहलाने के लिए कक्षा में शिक्षण हेतु जाने से पूर्व निम्न बिन्दुओं पर गहन मनन करना चाहिए कि

1. क्या आप मानसिक रूप से तैयार हैं?
2. क्या आपको अपनी विषय–वस्तु का पूर्ण ज्ञान है?
3. क्या छात्रों के प्रति आपके दिल में प्रेम प्रकट हुआ है?
4. क्या विद्यालय की गरिमा का मान आपको है? यदि हां तो जाइये, भावी राष्ट्र आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

शिक्षक को कक्षा से शिक्षण कालांश पूर्ण करके आकर निम्न बिन्दुओं

पर सोचकर अपने आप से प्रश्न पूछना चाहिए कि –

1. क्या मैंने आज का पाठ शिक्षण बिन्दुओं के अनुरूप पढ़ा दिया है?
2. क्या मैंने कल के गृहकार्य को जाँच लिया है?
3. क्या छात्रों को अगले दिवस हेतु गृहकार्य दे दिया है?
4. क्या छात्रों का मेरे प्रति प्रेम उमड़ा? यदि हाँ तो अपने?
5. राष्ट्र के प्रति मेरा दायित्व का निर्वहन क्या है?

उपर्युक्त बिन्दुओं के प्रति शिक्षक सोचने लग जाएगा तो वह दिन दूर नहीं रहेगा जब लोग पुनः गुरु को गोविन्द से भी बड़ा मानने लग जाएंगे। शिक्षक का प्रभाव समाज को नवीन दिशा देने में महत्त्वपूर्ण होता है। कोठारी कमीशन (1964–66) के प्रतिवेदन में लिखा गया है राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है। निःसन्देह जैसा शिक्षक होगा, वैसे ही उसके छात्र होंगे। उसी प्रकार का समाज बनेगा तथा उसके अनुरूप राष्ट्र का भविष्य बनेगा। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक योग्य हो, उसमें व्यावसायिक योग्यता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के साथ कर्तव्य निवर्हन के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति हो, शिक्षा के हाथ में स्वस्थ व शिक्षित समाज की बागडोर होती है। वह जैसा चाहे समाज को बदल सकता है। संसार की बड़ी से बड़ी क्रान्ति का आधार प्रभावी शिक्षक रहे हैं। शिक्षक राष्ट्र व छात्रों के भविष्य का निर्माता है। राष्ट्र का भविष्य विद्यालयों में लिखा जाता है। विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में अध्यापक प्रभावशीलता के उपर्युक्त समस्त विशेषताओं के साथ–साथ उसमें अपने ज्ञान को अपने गुणों को विद्यार्थियों तक स्थानान्तरण करने के लिए संचार कौशल का होना भी आवश्यक होता है।

शोध उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की समग्र अध्यापक प्रभावशीलता तथा आयामवार अध्यापक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. राजकीय तथा गैर राजकीय विद्यालय के समग्र अध्यापकों की कुल अध्यापक प्रभावशीलता तथा आयामवार अध्यापक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अर्थ एवं परिभाषाएं

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध–प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन द्वारा अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है। वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्त्ता का कार्य अंधे के तीर के समान होगा। अर्थात इसके अभाव में वह सही दिशा में एक कदम भी आगे बढ़ाने में असमर्थ होगा क्योंकि जब तक उसको यह पता नहीं होगा कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से किया गया है तथा उसके क्या निष्कर्ष आए हैं तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है तथा इसके अभाव में कार्य सम्पादन मुश्किल है इसके महत्त्व को बताते हुए गुडबार एण्ड स्केट्स ने लिखा है–"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचत होना आवश्यक है।" **चार्टर बी. गुड के अनुसार** "मुद्रित साहित्य के आधार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत का द्वार खोल देती है, तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है। वास्तव में रचनात्मकता, मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन आवश्यक है।" **डब्ल्यू. आर. बोर्ज के अनुसार**– "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य अवलोकन द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्त्वहीन होने की संभावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।" **जॉन डब्ल्यू. बैस्ट के अनुसार**– "सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान के लिए बहुत आवश्यक है। यद्यपि इस कार्य में समय अधिक लगता है। सम्बन्धित समस्या के साहित्य का ज्ञान होने पर यह जानने में सहायता मिलती है कि क्या ज्ञात होना शेष है तथा कौनसी समस्या का समाधान खोजना बाकी है।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संचार कौशल

यह एक महत्त्वपूर्ण मानवीय दक्षता है, जो सभी प्रकार की संस्थाओं एवं संगठनों की सफलता के लिए अति आवश्यक है। इसके अभाव में कोई भी संस्था या संगठन सुचारू रूप से नहीं चल सकती है।

शिक्षण प्रक्रिया में भी प्रत्येक अवस्था में संचार कौशल की आवश्यकता होती है। शिक्षक इसी कौशल की सहायता से अपने विचारों को प्रभावी एवं शुद्ध रूप से छात्रों तक पहुँचाता है।

"संचार कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है, जिसे अध्यापक अपने कक्षा–शिक्षण में प्रयुक्त करता है। यह शिक्षण प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित होता है। जिन्हें शिक्षक अपने कक्षा कक्ष अन्तःक्रिया में लगातार उपयोग करता है।" **आर. कटारा** के अनुसार "अपनी अभिव्यक्ति को श्रोता के सम्मुख जितनी स्पष्टता, सहजता एवं अधिगम से सहायक स्वरूप में प्रस्तुत करने की वक्ता की कला सिद्वता अथवा निपुणता के अभ्यास प्रयासों का प्रतिफल संचार कौशल में प्रकट होता है।"

बी. के. पासी के अनुसार "संचार कौशल सम्बन्धित उन व्यवहारों के सम्पादन से है जो छात्रों के सीखने के लिए सुगमता प्रदान करने के इरादे से किए जाते हैं।"

जी. टी. हंट (1987) ने "सम्प्रेषण को लोगों की सूचनाओं को प्रेषित करने एव प्राप्त करने की प्रक्रिया बताया है। उन्होंने सम्प्रेषण मॉडल को वक्ता, वाच्य, श्रोताओं तथा पृष्ठपोषण के सम्प्रत्यय के रूप में प्रस्तुत किए हैं।"

मोर्लन एव टयूटले (1976) ने "सम्प्रेषण की प्रक्रिया को परिभाषित करते हुए इसे वाच्य (कथन/भाषण) के माध्यम से अर्थ निकालने की प्रक्रिया बताया है।"

इस प्रकार परिभाषाओं के आधार पर संचार कौशल की निम्नांकित विशेषताएँ उभर कर सामने आती हैं–

1. संचार कौशल छात्रों के सीखने में सहायता एवं सुगमता प्रदान करते हैं।
2. संचार कौशल शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं।
3. संचार कौशल शिक्षा क्रियाओं (व्यवहारों) से सम्बन्धित होता है। समुचित कक्षा अन्तःक्रिया की परिस्थिति उत्पन्न करता है।
4. संचार कौशल शिक्षण की प्रत्येक अवस्था में आवश्यकता होती है।
5. संचार कौशल विषय अध्यापन में अध्यापकों का मार्गदर्शन है। संचार कौशलाभाव, सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।
6. संचार कौशलाभाव, शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

अध्यापक प्रभावशीलता के निर्धारक तत्व कौन–कौन से होते हैं? तथा अध्यापक प्रभावशीलता का सम्बन्ध किन–किन चरों से अत्यधिक होता है? प्रभावशाली अध्यापक का व्यक्तित्व कैसा होता है? तथा उनमें संचार काशैल किस स्तर का होता है? उनमें किन–किन योग्यताओं एवं मूल्यों का होना आवश्यक है? जिससे वह प्रभावशाली अध्यापक कहलाए। इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर समय–समय पर अन्यान्य शोध अध्ययन हुए है जिनका विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है–

निष्कर्ष

कुल अध्यापक प्रभावशीलता एवं आयामवार प्रभावशीलता के मध्यमान औसत मध्यमान से अधिक पाए गए। राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के अध्यापकों में कुल अध्यापक प्रभावशीलता तथा आयामवार अध्यापक प्रभावशीलता के मध्यमानों में अन्तर 0.05 सार्थकत स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। पुरुष एवं महिला अध्यापकों में कुल अध्यापक प्रभावशीलता मे अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। अध्यापक प्रभावशीलता के आयाम संख्या छः 'अध्यापक छात्र प्रभावशीलता' महिला अध्यापकों की तुलना में पुरुष अध्यापकों की सार्थक रूप से उच्च पायी गई। शेष आयामवार अध्यापक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ सूची

[1] Adegbile, J.A. and Adeyemi B.A. (2008) Enhancing Quality Assurance through Teacher's Effectiveness. *Educational Research and Review*, 3 (2), 061- 065.

[2] Agarwal, S. (1988) Teacher Effectiveness of Female Teachers .Fifth survey of Educational Reserch.2, National Council of Educational Research and Training, New Delhi.

[3] Ajad, Rakesh Kumar (2006) A Journal of International Knowledge of Education AIM Gajiyabad Vol 2 No.

[4] American Heritage Dictionary (2006) English Language, Fourth Edition Published by Houghton Miffin Company.America.

[5] Andersen, J.F. (1979) *Teacher Immediacy as a Predictor of Teaching Effectiveness*. Communication Yearbook 3. International Communication Association, Sage Publication, p.543-559.

[6] Anderson, L.W. (1991) Increasing Teacher Effectiveness. International Institute For Educational Planning, UNESCO, Paris, 16-17.

[7] Arokiadoss, S.A. (2005) Teacher Effectiveness of College Teachers. Perspective in Education, 21(2), 106

[8] Baacke, A. (1985) Teacher's Personality Correlates and Scholastic Competence Related to Teacher Effectiveness. Indian Education Review, 21, 3.

[9] Bansibihari, P. and Surwade, L. (2006) The Effect of Emotional Maturity on Teachers Effectiveness. Educational Tracks, 6, 1.

[10] Bennett, N. (1976) Teaching Styles & Pupil Progress. London: Open Books.

[11] Best, J.W. (1964) 'Research in Education."' Prentice Hall of India, Private Ltd. New Delhi 110001 P. 110-112

[12] Bharduwaj (2010) Journal of Indian Education Vol 34 No.-1 Jan-June PP 101-108

[13] Bhatnagar, R. P. and Meenakshi Bhatnagar (2007) Educational Research. Second Edition, Layal Book Depot Meerut (MP).

[14] Booher, Dianna Daniels (1994). Communicate with confidence! : How to say it right the first time and every time. New York: McGraw-Hill.

[15] Brodie, D.A. (1998) Do Students Report That Easy Professors Are Excellent Teachers? The Canadian Journal of Higher Education 28 (1) 1-20.

[16] Bruening, Thoms H. and Tracy S. Hover (1991) Personal Life Factors as Related to Effectiveness and Satisfaction of Secondary Agricultural Teachers. Journal of Agricultural Education, The Pennsylvania state university. United States.

[17] Buch, M.B. "Second Survey of Research in Education." NCERT, New Delhi. P. 417

[18] Buch, M.B. "Fourth Survey of Research in Education." NCERT, New Delhi. Vol- II, 1983-88, P- 150.

[19] Buch, M.B. "Fourth Survey of Research in Education", NCERT, New Delhi. Vol- II, 1983-88, P- 187.

[20] Buch, M.B. "Fourth Survey of Research in Education", NCERT, New Delhi. Vol- II, 1983-88, P- 413.

[21] Buch, M.B. "Fifth Survey of Research in Education", NCERT, New Delhi. Vol- II, 1988-92, P- 1351.

[22] Carlo, Mango (2007) The Role of Teacher Efficacy and Characteristics on Teaching Effectiveness, Performance, and Use of Learner – centered practices. The Asia Pacific Education Researcher, 16,1.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 5, May- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

[23] Carlo Magno and Josefina Sembrano (2007) The Role of Teacher Efficacy and Characteristics on Teaching Effectiveness, Performance, and Use of Learner-Centered Practices . The Asia Pacific Education Researcher 16(1) . 73-90.